Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLV

डूँगरपुर जिले में जनजातियों की आधारभूत सुविधा सूचकांक स्तर (1981 से 2010) (एक भौगोलिक अध्ययन भू.अ.नि.वृ. के आधार पर)

डॉ. गोविन्द लाल सरगड़ा*

* भूगोल विभाग, गुरूकुल महाविद्यालय, सागवाड़ा, डूँगरपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – जो नैसर्गिक जीवन जीते हैं। अफ्रीका, दक्षिणी एशिया, भारत और अन्य पिछड़े देशों में इनके लिए आदिवासी शब्द ही प्रयुक्त किया जाता है। इन जनजातियों को विभिन्न नामों से भी जाना जाता है। वन्य जाति, वनीय जाति, वनवासी, वनों के आश्रय में रहने वाले, पहाड़ी लोग, पहाड़ियों पर रहने वाले, आदिम जाति, प्रारम्भिक लोग, आदिवासी तथा कई स्थानीय नामों से भी इन्हें जाना जाता रहा है। अति न्यूनतम स्तर के अन्तर्गत 7 भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त क्रमशः पाडवा, सरोदा, गैंजी, देवलखास, चिखली, आंतरी और कुआँ पाये गये। यह स्तर अति न्यूनतम रहने का मुख्य कारण यहाँ पर जनजाति जनसंख्या का बाहुल्य पाया जाना है इस कारण यहाँ के निवासी दूर-दराज क्षेत्रों तथा प्रकीर्णन बसाव में रहने के कारण यहाँ पर आधारभूत सुविधाओं के विकास प्रभावी रूप से संभव नहीं हुआ है।

शब्द कुंजी – वनवासी, वनीय जाति, जनजाति, आधारभूत सुविधाऐं, बाहुल्य, प्रकीर्णन, भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त।

प्रस्तावना – जनजाति या आदिवासी शब्द का विन्यास 'आदि' अर्थात् पुरातन तथा वासी अर्थात 'रहने वाला' या 'निवासी' के रूप में माना जाता है। अँग्रेजी में इनको 'Tribe' कहा गया है, जो लेटिन भाषा के 'Tribus' शब्द से बना हैं। रोमन एवं ग्रीक लोग राजनैतिक विभाजन और भौगोलिक क्षेत्रों के लिए प्रयुक्त करते हैं। वास्तव में यह शब्द ऐसे लोगों के लिए उपयुक्त है, जो नैसर्गिक जीवन जीते हैं। अफ्रीका, दक्षिणी एशिया, भारत और अन्य पिछड़े देशों में इनके लिए आदिवासी शब्द ही प्रयुक्त किया जाता है। इन जनजातियों को विभिन्न नामों से भी जाना जाता है। वन्य जाति, वनीय जाति, वनवासी, वनों के आश्रय में रहने वाले, पहाड़ी लोग, पहाड़ियों पर रहने वाले, आदिम जाति, प्रारम्भिक लोग, आदिवासी तथा कई स्थानीय नामों से भी इन्हें जाना जाता रहा है।

किसी भी क्षेत्र के विकास को गति प्रदान करने हेतु सामाजिक सुविधाओं का सम्यक नियोजन एक महती आवश्यकता है। विकास प्रक्रिया में सामाजिक उत्थान के साथ ही संस्थागत परिवर्तन भी महत्त्वपूर्ण होता है। इस माध्यम से सामाजिक सुविधाओं व पद्धतियों में परिणात्मक एवं गुणात्मक परिवर्तन लाकर क्षेत्र के सामूहिक व्यक्तित्व का विकास किया जा सकता है इस दृष्टिकोण से अध्ययन क्षेत्र में सामाजिक अवस्थापनात्मक तत्वों की उपलब्धता तथा सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन एवं विश्लेषण करके उपलब्ध सुविधाओं में अभिवृद्धि हेतु नियोजन एवं विकास ही शोध का प्रमुख उद्देश्य है। नयी संस्थाओं के निर्माण के साथ-साथ संस्थागत सुविधाओं के सदुपयोग हेतु जनसंख्या में जागरूकता, विकासपरक सामाजिक मूल्यों का विकास भी होता है। सामाजिक सेवाओं व सुविधाओं को क्षेत्र में सही रूप में विकेन्द्रित करके अर्थ तल के विकास एवं सांस्कृतिक उन्नयन हेतु एक निश्चित दिशा प्रदान की जा सकती है।

सम्पूर्ण विकास एवं नियोजन की प्रक्रिया में सामाजिक सेवाएं एवं सुविधाएं एक महत्त्वपूर्ण अंग के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाहन करती है। इस सन्दर्भ में 'रोडीनेली' का विचार है कि यदि आर्थिक प्रगति के साथ ही समानता एवं सन्तुलन के उद्देश्य की प्राप्ति करनी है तो सामाजिक सुविधाओं, सेवाओं, उत्पादन गतिविधियों एवं अवधात्मक तत्वों का तर्क संगत तथा उत्प्रेरक वितरण प्रमुख समस्या के रूप में उभरता है। सामाजिक तत्व-जनसंख्या वृद्धि, घनत्व, वितरण, जातिय संगठन, साक्षरता, शिक्षण संस्थान, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सुविधाएं व उनका स्तर, सामाजिक विकास को गति प्रदान करने वाले ऐसे संसाधन है जो ठोस आधार प्रस्तुत करते हैं इनके माध्यम से ही सामाजिक स्तरों में उत्थान किया जा सकता है।

वर्तमान में **डी.के. नायक** (1998) ने जनजाति पर भौगोलिक पृष्ठ भूमि के प्रभाव को अपने शोध-पत्र 'Geographical Background of Tribal Situation in North-East India' में प्रस्तुत किया हैं। इन्होंने अपने दूसरे शोध-पत्र (1998) में 'Pattern of Prevalence and Related Environment' में पर्यावरण से सम्बन्ध बताते हुए प्रभावों की व्याख्या की है।

जे.बी. गांगुली (2001) द्वारा अपने शोध-पत्र में भारत की जनजातियों के विकास के लिए उनकी संस्कृति एवं पारिस्थितिकी का अध्ययन किया है, इसी प्रकार **एस.के. शर्मा** तथा **एन.आर. शर्मा** ने 'ढएघ (Traditional Ecological Knowledge) MTK (Modern Technological Knowledge) नामक राजस्थान राज्य के सम्बन्ध में अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। **टी.के. वाजदी** तथा **कन्हैया आहुजा** (2001) ने जनजाति विकास के लिए साप्ताहिक बाजार के विचार पर जोर दिया और इसके महत्व को बताया।

दीपक इसार तथा **एस.डी. धाकड़** (2002) ने प्रकाशित शोध-पत्र में जनजातियों द्वारा कृषि पर शोध के आधार पर विभिन्न स्तरों को बताया है। **कल्याण चक्रवर्ती** ने अपने शोध-पत्र में जनजातियों के विकास हेतु कुछ सुझाव दिये हैं, जिनमें पारिस्थितिकी परिदृश्यों को बदलना आवश्यक

बताया है, लेकिन **बालू इमाम** (2002) ने झारखण्ड की जनजातियों के अध्ययन में जनजातिय सभ्यता के बारे में गहन अध्ययन किया है।

अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक परिचय –राजस्थान प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टिकोण से धनी प्रदेश की श्रेणी में आता है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के दृष्टिकोण से डूँगरपुर जिला राजस्थान के **'वागड प्रदेश'** का अंग रहा है, लेकिन सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनेतिक तथ्यों के आधार पर यह क्षेत्र सदैव पूर्णरूप से एक भौगोलिक इकाई के रूप में अपनी अलग पहचान बनाए हुए है तथा यह क्षेत्र **'वागड प्रदेश'** के नाम से जाना जाता है। डूँगरपुर जिला राजस्थान की अरावली पर्वत मालाओं के दक्षिणांचल में स्थित विस्तृत पहाड़ी भाग में बसा हुआ है। इसकी भौगोलिक स्थिति $23^0$20' से $24^0$01' उत्तरी अक्षांश और $73^0$21' से $74^0$23' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इस जिले के उत्तर में उदयपुर जिले का विस्तार है तथा दक्षिण-पश्चिम में गुजरात राज्य की लम्बी सीमा रेखा लगभग 100 किलोमीटर है, जो प्रदेश की सीमा का निर्धारण करती है। पूर्व में बाँसवाड़ा जिला स्थित है। जिले की लम्बाई उत्तर से दक्षिण में 67.5 किलोमीटर तथा पूर्व से पश्चिम में 80 किलोमीटर है। इस जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 3855 वर्ग किलोमीटर है एवं क्षेत्रफल की दृष्टि से जिले का राज्य में 26वाँ स्थान है। अध्ययन क्षेत्र के दक्षिणी-पश्चिमी में 100 किलोमीटर लम्बी सीमा रेखा, जिसमें गुजरात के दो जिले साबरकांठा व पंचमहल आते हैं। इस आधार पर अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक दृष्टिकोण से ही नहीं अपितु सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, दृष्टिकोण से भी विशेष महत्त्व रखता है।

जिलें में खनिजों के भण्डार में भी अग्रणीय स्थान रखता है। भू-वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन क्षेत्र प्री-केम्ब्रियन अरावली श्रृंखला का भाग हैं यहाँ के केन्द्रीय भाग में विशेष रूप से डूँगरपुर नगर के दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र में क्वार्ट्ज की धारियों वाला स्लेट पत्थर प्रचुर मात्रा में पाया जाता हैं, साथ ही यहाँ एसबेस्टोस, क्रोमाईट, मेगनेटाइट और टेल्स (स्टीटाइट्स) के महत्त्वपूर्ण सम्भाव्य स्त्रोत के रूप में अल्ट्रा बेसिक में भी दिखाई पड़ती है। खनिजों में सोप स्टोन, एसबेस्टोस, बेरिस और फ्लोराइट मुख्य है। उच्चावच की दृष्टि से जिले का अधिकांश भाग 150 से 130 मीटर (औसत समुद्र तल से) ऊँचा है। इस प्रदेश में जिले की सर्वोच्च चोटी धनमाता स्थित है जो औसत समुद्र तल से 572 मीटर (1876 फीट) ऊँचा है। अन्य पहाड़िया अमीझरा (449 मीटर), डूंगरपुर मदार (424 मीटर), रीठड़ा (415 मीटर) इत्यादि स्थित है।

अध्ययन क्षेत्र के जनजातियों की सामाजिक विकास में नदियों का विशेष महत्त्व है। नदियों से न केवल सिंचाई सुविधा उपलब्ध होती है अपितु पीने का पानी, वृक्षारोपण, वन विकास, हरे-भरे मैदानी क्षेत्रों तथा आदिवासी क्षेत्रों के लिए कृषि उत्पादन के लिए उपजाऊ मिट्टी के विकास में भी सहायक होती है। अध्ययन क्षेत्र की नदियों के अपवाह क्षेत्र प्राचीन काल से ही बहुत परिवर्तन हुए है। क्षेत्र में वर्ष पर्यन्त बहने वाली नदियों में माही नदी, सोम नदी, तथा जाखम नदी है।

उद्देश्य – प्रस्तुत शोध कार्य के अन्तर्गत निम्नलिखित उद्देश्यों को आधार माना गया –

1. जनजाति प्रदेश की भौगोलिक विशेषताओं (जैसे धरातलीय स्वरूप, जल प्रवाह, मिट्टी आदि) की व्याख्या प्रस्तुत करना।
   अध्ययन क्षेत्र की आधारभूत सुविधा संरचना (जैसे- पक्की सड़के, बस अड्डा, रेल्वे स्टेशन, डाकघर, दूरभाष, जल सुविधा, जलविद्युत,) की व्याख्या प्रस्तुत करना।
2. अध्ययन क्षेत्र की जनजातिय आधारभूत सुविधा संरचना का अध्ययन प्रस्तुत करना।
3. जनजातियों की समस्याओं को प्रस्तुत करना।

अनुसंधान विधि – प्रस्तुत शोध कार्य में विवरणात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध विधियों का प्रयोग किया जायेगा। शोध के अन्तर्गत द्वितीयक सूचनाओं व आँकड़ों को आधार रूप में प्रयोग किया जायेगा। आँकड़ों के अन्तर्गत क्षेत्र की भौगोलिक, जनसंख्या, सामाजिक विकास से संबंधित सूचनाओं आदि की जानकारी हेतु जनगणना पुस्तिका 1981, 1991, 2001, 2011 जिला पुस्तिका, डूँगरपुर विषय से संबंधित प्रकाशित - अप्रकाशित पुस्तकें, समाचार पत्र-पत्रिकाएं इत्यादि को आधार बनाया गया।

जनांनाकीय विश्लेषण – जनांनाकीय अध्ययन से जनसंख्या की स्थिति का विश्लेषण किया जाता है तथा उसका क्षेत्रीय एवं संरचनात्मक अध्ययन किया जाता है। मानव को मूल्यवान तथा असीमित क्षमताओं से युक्त संसाधन मानकर उसका सर्वांगीण विकास किया जाना चाहिए, क्योंकि मनुष्य के सर्वांगीण विकास के बिना राज्य या क्षेत्र के विकास की कल्पना करना व्यर्थ हैं। भारत की मानव विकास रिपोर्ट से स्पष्ट होता है कि विकास हेतु जो राज्य शिक्षा, स्वास्थ्य, निर्धनता उन्मूलन, समाज कल्याण, जनसंख्या नियंत्रण तथा अन्य सामाजिक सेवाएं देने में अग्रणी है, अंतत: वह सम्पूर्ण विकास की राह पर जा रहे हैं।

डूंगरपुर में वर्ष 1981 में 6,82,445, 1991 में 8,74,549, 2001 में 11,07,643 तथा 2011 13,88,552 में थी जिले की साक्षरता दर 1981 में 17.19, 1991 में 20.67, 2001 में 36.93 तथा 2011 में 48.19 तथा लिंगानुपात राज्य के औसत से अधिक रहा है। डूंगरपुर जिला अनुसूचित जनजाति बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण यहां पर लगभग 72 प्रतिशत जनसंख्या अनुसचित जनजाति की निवास करती है। इस कारण जिले की साक्षरता दर राज्य की साक्षरता दर से अति न्यून है। वर्ष 2011 के अनुसार जिलें में कुल 21 भू अभिलेख निरीक्षक वृत है।

आधारभूत सुविधा विकास सूचकांक–आधारभूत सविधा विकास सूचकांक ज्ञात करने के लिए सर्वप्रथम संयुक्त सूचकांक के माध्यम से प्राप्त मुल्य कों बंसम तिमम करने के लिए उसके निम्नलिखित सूत्र का उपयोग किया गया है जो इस प्रकार है :-

$$\text{आधारभूत सविधा विकास सूचकांक} = \frac{\text{वास्तविक मूल्य} - \text{न्यूनतम मूल्य}}{\text{अधिकतम मूल्य} - \text{न्यूनतम मूल्य}}$$

अध्ययन क्षेत्र के शैक्षणिक सुविधा मूल्यांकन की गहना के लिए शैक्षिक सुविधा सूचकांक भी ज्ञात किया गया है। अध्ययन क्षेत्र के शैक्षिक विकास सूचकांक के अन्तर्गत 7 सूचकों पक्की सड़के, बस अड्डा, रेल्वे स्टेशन, डाकघर, दूरभाष, जल सुविधा, जलविद्युत, का प्रयोग किया गया है

आधारभूत सुविधा संरचना सूचकांक – आधारभूत सुविधा किसी भी क्षेत्र के आर्थिक विकास को प्रभावित करती है अत: किसी भी क्षेत्र के आर्थिक विकास के लिए सर्वप्रथम वहाँ के आधारभूत सुविधाओं को मजबूत करना होगा तथा आधारभूत सुविधाओं का वितरण जनसंख्या तथा गांवों के अनुरूप करना होगा, ताकि समान विकास हो सके। इसके विश्लेषण के लिए सभी आधारभूत सुविधाओं के सुचकांक ज्ञात करने हेतु संयुक्त सूचकांक एवं श्रेणी द्वारा सूचकों की गणना की गयी है।

वर्ष 1981 में प्रथम स्थान पर डूँगरपुर वृत, द्वितीय स्थान पर आसपुर

वृत्त और तृतीय स्थान पर साबला वृत्त रहा तथा अन्तिम तीन स्थान पर चिखली, पाडवा, कुआँ भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त रहे हैं। वर्ष 1991 में प्रथम स्थान पर डूँगरपुर वृत, द्वितीय स्थान पर आसपुर वृत्त और तृतीय स्थान पर धम्बोला वृत्त रहा है, तथा अन्तिम तीसरे स्थान पर पाडवा एवं चिखली एवं द्वितीय स्थान पर सरोदा एवं तृतीय स्थान पर गैंजी भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त रहे हैं।

वर्ष 2001 में प्रथम स्थान पर डूँगरपुर वृत, द्वितीय स्थान पर आसपुर वृत, और तृतीय स्थान पर धम्बोला वृत्त रहा तथा अन्तिम तीन स्थान पर क्रमश: देवलखास, गैंजी, पाडवा भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त रहे हैं। वर्ष 2011 के विश्लेषण अनुसार प्रथम स्थान पर डूँगरपुर वृत, द्वितीय स्थान पर आसपुर वृत्त और तृतीय स्थान पर धम्बोला व झोंतरी वृत्त रहा है तथा अन्तिम तीन स्थान पर गैंजी, देवलखास एवं पाडवा भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त रहे है। अत: स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में आधारभूत सुविधाओं की कमी है। अभी भी यहाँ के गाँवों में इनका वितरण बहुत ही असमान है। जनसंख्या के अनुपात में इन सुविधाओं को बढ़ाने की अति आवश्यकता है। तभी आर्थिक विकास की उचित गति की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

डूँगरपुर जिला : भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त आधारभूत सुविधा सूचकांक (1981-2011)

क्र.	भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त	वर्ष 1981	वर्ष 1991	वर्ष 2001	वर्ष 2011	औसत
1	डूँगरपुर	1.00	1.00	1.00	1.00	1.00
2	आंतरी	0.14	0.18	0.12	0.18	0.14
3	फलोज	0.37	0.45	0.42	0.49	0.41
4	देवलखास	0.13	0.19	0.00	0.01	0.08
5	थाना	0.38	0.36	0.34	0.28	0.34
6	गेंजी	0.14	0.10	0.03	0.00	0.06
7	बिच्छीवाड़ा	0.33	0.36	0.28	0.19	0.29
8	सागवाड़ा	0.42	0.42	0.44	0.65	0.46
9	जोगपुर	0.28	0.29	0.33	0.39	0.30
10	चितरी	0.44	0.43	0.46	0.55	0.45
11	ठाकरड़ा	0.12	0.15	0.35	0.36	0.21
12	सरोदा	0.04	0.05	0.11	0.10	0.05
13	पाड़वा	0.01	0.00	0.06	0.06	0.00
14	आसपुर	0.59	0.62	0.93	0.99	0.78
15	गणेशपुर	0.21	0.29	0.67	0.96	0.47
16	साबला	0.54	0.46	0.67	0.97	0.62
17	धम्बोला	0.15	0.47	0.81	0.98	0.54
18	पीठ	0.24	0.25	0.54	0.89	0.42
19	झोंतरी	0.14	0.15	0.71	0.98	0.42
20	कुआँ	0.04	0.13	0.25	0.32	0.15
21	चिखली	0.00	0.00	0.31	0.32	0.11
	माध्य	0.27	0.30	0.42	0.52	0.35
	प्रमाप विचलन	0.23	0.23	0.28	0.38	0.25
	विचरण गुणांक	85.60	76.25	67.47	72.61	71.91

स्रोत : *जनगणना के आँकड़ों की गणना*

संयुक्त सूचकांक मूल्य के आधार पर विश्लेषण से पता चलता है कि डूँगरपुर भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त प्रथम स्थान पर एवं द्वितीय स्थान पर आसपुर भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त तथा तृतीय स्थान पर साबला भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त था। अन्तिम तीन स्थान पर पाडवा भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त द्वितीय स्थान पर सरोदा भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त और तृतीय स्थान पर गैंजी भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त था। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त स्तर पर आधारभूत सुविधा सूचकारंक में काफी अन्तर देखने को मिला है।

आधारभूत संरचना विकास स्तर सूचकांक – अध्ययन क्षेत्र में आधारभूत सुविधाओं को विभिन्न भू-अभिलेख निरीक्षक यदि समस्त स्थान को विभिन्न विकास के स्तरों में देखा जाये कि कितने भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त अति उच्च या उच्च या मध्यम या न्युन या अति न्युन श्रेणी में आती है। क्योंकि आधारभूत सुविधाओं के आधार पर सभी भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त में सुविधाओं के सूचकांक मूल्य एवं उनके अलग-अलग प्रतिशत दर्शाये है।

डूँगरपुर जिला : आधारभूत सुविधा स्तर सूचकांक 1981-2011

क्र.	स्तर	सूचकांक मूल्य	भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त की संख्या	प्रतिशत
1.	अति उच्च	0.80 - 1.00	1	4.78
2.	उच्च	0.60 - 0.80	2	9.54
3.	मध्यम	0.40 - 0.60	7	33.34
4.	न्यून	0.20 - 0.40	4	19.40
5.	अति न्यून	0.00 - 0.20	7	33.34
	कुल		**21**	**100.00**

स्रोत : जनगणना के आँकड़ों की गणना

अति न्यूनतम स्तर (0.00 से 0.20) के अन्तर्गत 7 भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त क्रमश: पाडवा, सरोदा, गैंजी, देवलखास, चिखली, आंतरी और कुआँ पाये गये। यह स्तर अति न्यूनतम रहने का मुख्य कारण यहाँ पर जनजाति जनसंख्या का बाहुल्य पाया जाना है इस कारण यहाँ के निवासी दूर-दराज क्षेत्रों तथा प्रकीर्णन बसाव में रहने के कारण यहाँ पर आधारभूत सुविधाओं के विकास प्रभावी रूप से संभव नहीं हुआ है। मध्यम स्तर (0.40 से 0.60) श्रेणी के अन्तर्गत सर्वाधिक भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त पाये गये जिनका प्रतिशत 33.34 रहा। जबकि भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त न्यून स्तर (19.40 प्रतिशत) में भी 4 भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त आते है इसमें क्रमश: ठाकरडा, बिच्छीवाड़ा, जोगपुर एवं थाना है। उच्च स्तर (0.60 से 0.80) के अन्तर्गत मात्र 2 (9.54 प्रतिशत) भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त साबला एवं आसपुर सम्मिलित है एवं अति उच्च स्तर के अन्तर्गत एक मात्र 1 भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त डूँगरपुर पाया गया। अति उच्च स्तर में डूँगरपुर भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त में सर्वाधिक आधारभूत सुविधाओं के विकास के कारण नगरीयकरण, जिला मुख्यालय, यातायात, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि प्रमुख सुविधाएँ उपलब्ध है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Chakrabarti, Kalyan, 2002; ***"Tribal Development and Ecological Scenario",*** A Journal of the Stricture of Social Research and Applied Anthropology, p. 121.
2. Sharma, S.K. and Vishuabarma, D.D., 1996; ***"Evolution of Knowledge and Use of High Yielding***

Varieties of Seed by the Tribal of the Betul – Chindwara Plateau M.P.", The Geographer, Vol. 45, No. 1, p. 44-54.

3. Dube, S.C., Nov. 1976; ***"Nehru and Tribal India",*** Secular Democracy, 9 (21-22), p. 183-184.
4. District Handbook Census, District Dungarpur 1981, 1991, 2001, 2011.
5. www.censusindia.gov.in
6. www.censusrajasthan.gov.in
7. www.dungarpur.nic.in

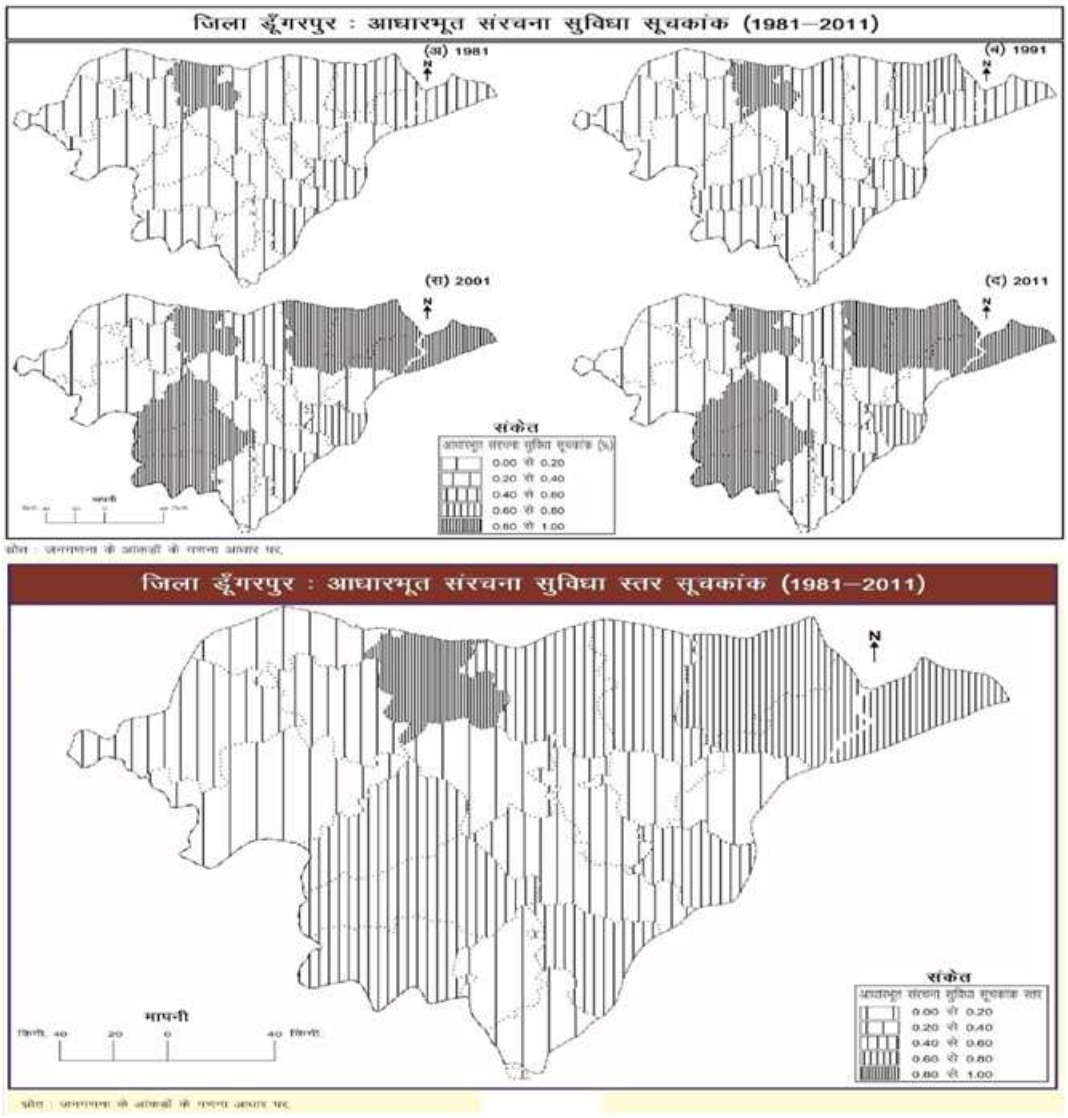

****